International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 5 January – February - 2026

सिनेमा के क्षेत्र में नारी का योगदान

प्रा. कदम कोमल सुभाष

शरदचंद्र पवार महाविद्यालय, लोणन्द

Corresponding Author – प्रा. कदम कोमल सुभाष

DOI - 10.5281/zenodo.18919416

सारांश :

जब दादासाहब फालके ने राजा हरिश्चंद्र बनाने का फैसला किया, तब फिल्मो में काम करने के लिए कोई महिला राजी नहीं हुई। वैश्याओं ने भी इसे अपनी गरिमा के खिलाफ़ समझकर काम करने से इनकार कर दिया। दादासाहब फालके क्या करते मजबूर होकर होटल के वेटर अन्ना सालुंके को राजी किया और महिला की वेशभूषा में उसे तारामती के रूप में पेश किया।इस तरह भारत की पहली नायिका निजी जीवन में पेश कर दिया । इस तरह भारत की पहली नायिका निजी जीवन में पुरूष थी । लेकिन फिल्मों में नारी की मौजूदगी के बिना परदे पर जीवन को दिखाना मुमकिन ही नहीं हैं, दादासाहब फालके ने फैसला किया कि अपनी अगली फिल्म के लिए वह किसी महिला को राजी कर लेंगे । उनकी तलाश पूरी हुई और फिल्म भस्मासुर मोहिनी में काम करने के लिए कमलाबाई गोखले राजी हो गई । मराठो नाटकों में काम करनेवाली कमलाबाई ने तमाम विरोधों और अवशेषों के बावजूद फिल्मों में काम किया । सिनेमा में नारी- शमीम खान (विषय प्रवेश)

प्रस्तावना :

समाज की तरह हिंदी फिल्मों में भी पुरुषो का दबदबा हैं । ज्यादातर फिल्मों का भार नायकों के मजबूत कंधों पर होता हैं । फिल्मे उनके नाम से बिकती हैं । ऊन्हे नायिकाओं से ज्यादा कीमत और प्रचार मिलता हैं । इन कड़वी सच्चाई के बावजूद नरगिज, मीनाकुमारी, मधुबाला, नूतन,हेमा मालिनी, रेखा, श्रीदेवी, माधुरी दीक्षित और ऐश्वर्या राय जैसी नायिकाओं ने अपनी लोकप्रियतासे समय- समय पर नायकों के मजबूत कंधों को चुनौती दी ।इन नायकाओं की अभिनयक्षमता और लोकप्रियता से प्रभावित होकर कई निर्देशक इन्हें मुख्य भूमिका में लेकर नायिका प्रधान फिल्मे बनाई।

सत्तर का दशक हिंदी फिल्मों का टर्निंग पॉइंट माना जाता हैं , जब परदे पर रूमानियत की जगह खून – खराबेने ले ली। समांतर सिनेमा के रूप में एक आंदोलन की शुरुवात हुई। इन फिल्मों में नायिका के रूप में दर्शको ने ऐसी औरतो को देखा, जो साधारण होते हुए भी असाधारण थी। शबाना आजमी, स्मिता पाटिल और दीप्ति नवल जैसी बेजोड़ और नायाब नायिकाओं का अभिनय और रहन – सहन इतना स्वाभाविक था कि यह सिनेमा के नारी पात्र न लगकर समाज से सीधे उठाए हुए लगते हैं । ये नायिकाए अपने अधिकारों के लिए सामाजिक व्यवस्था और उसके ठेकेदारों से टकरा जाती थी । इन फिल्मों और उनकेनारी पात्रों के औरतों को एक नई शक्ति से भर दिया और उन्हें अबला का चोला उतार फेंक अपने अधिकारों के लिए भीख मांगने के लिए प्रेरित किया।

आज सिनेमा को सौ वर्ष पूरे हो चूके हैं । इस सौ वर्षो की यात्रा में फिल्मों में नारी प्रस्तुतीकरण और उनके समाज पर प्रभावों पर काफी कुछ लिखा और बोल गया । आलोचनाओं और प्रशंसाओं के बी एक सत्य हमेशा मौजूद

रहा कि फिल्मों की शुरुआत से ही नायिकाओं का अपने समय के नारी समाज पर गहरा प्रभाव रहा हैं। आज नारी समाज पर गहरा प्रभाव रहा हैं। आम नारी सदैव अपने दौर की नायिकाओं द्वारा निभाए पात्रों का हो या उनकी जीवन शैली का बीसवी सदी में समाज में अनेक बदलाव हुए और कई कानून बने, जब इनका विश्लेषण किया जाए तो यह साफ तौर पर नजर आएगा कि किस तरह से सिनेमा ने बेमेल विवाह, विधवा विवाह, स्त्री शिक्षा, समानता का अधिकार, आर्थिक स्वावलंबन तथा तलाक जैसे गंबीर विषयों को संवेदनशीलता के साथ देकर उसके हक़ की लड़ाई को बल दिया।

सजीव के निर्मिती काल से ही नर – मादी एक अभिन्न भाग से बने हुए हैं। शौर्य पुरुष और श्रृंगार स्त्री ये भूमिकाएँ जीवन में चलती रही हैं। और आज 21 वी सदी में नारी हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभा रही हैं।और उसी का एक भाग हैं सिनेमा।

निष्कर्ष :

स्पष्ट हैं यह एक यात्रा हैं, यह जानने की कि नारी समाज का सौ साल का इतिहास किस- किस दौर से गुजरा। एक कोशिश हैं परदे के किरदारों के जरिए औरतो के उन एहसासों और जज्बातों को महसूस करने की, जिन्हें हम परदे के किरदारों के बगैर शायद नहीं कर पाते।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) चैट जीपीटी https://chat.openai.com/

२) गूगल आई ई. :- https://ai.google/

३) हिंदी सिनेमा और दाम्पत्य संबध – डॉ. चंद्रकांत मिसाल

४) जहां औरते गढ़ी जाती हैं – मृणाल पाण्डे

५) हिंदी सिनेमा में चित्रित पत्नी उत्पीडन - डॉ. चंद्रकांत मिसाल

६) सिनेमा और साहित्य का अंत: संबध - डॉ. चंद्रकांत मिसाल